सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

प्रेरणा - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

■ वर्ष : 12 ■ ■ अंक : 5 ■ ■ 5 अगस्त : 2015 ■ ■ मूल्य : 20रु. ■

रायपुर में चातुर्मास भव्य प्रवेश

भगवान महावीर

आहस्स हिंसा समितस्स जा तु, सा दव्वतो होति ण भावतो उ ।
भावेण हिंसा तु असंजतस्स, जे वा वि सत्ते ण सदा वधेति ॥

-बृहत्कल्प भाष्य 3933

संयमी साधक के द्वारा कभी हिंसा हो भी जाए, तो वह द्रव्य हिंसा होती है, भाव हिंसा नहीं। किंतु जो असंयमी है, वह जीवन में कभी किसी का वध न करने पर भी, भाव-रूप से सतत हिंसा करता रहता है।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	06
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	08
5.मृत्यु को बनाये जीवन का उत्सव	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	10
6. समाचार दर्शन	संकलन	12-29
7. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-111	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	31
8. जहाज मंदिर पहेली 109 का उत्तर		33
9. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	34

पर्युषण महापर्व प्रारंभ

भाद्रपद वदि 13 गुरुवार
ता. 10 सितम्बर 2015

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि पुण्यतिथि

भाद्रपद वदि 14 शनिवार
ता. 12 सितम्बर 2015

जन्म वांचन

भाद्रपद शुक्ल 1 सोमवार
ता. 14 सितम्बर 2015

संवत्सरी महापर्व

भाद्रपद शुक्ल 4 गुरुवार
ता. 17 सितम्बर 2015

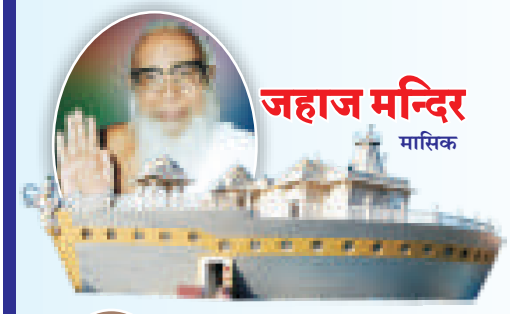

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव गणाधीश
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 5 5 अगस्त 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	:	15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	:	11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	:	9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	:	7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	:	3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	:	3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	:	1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

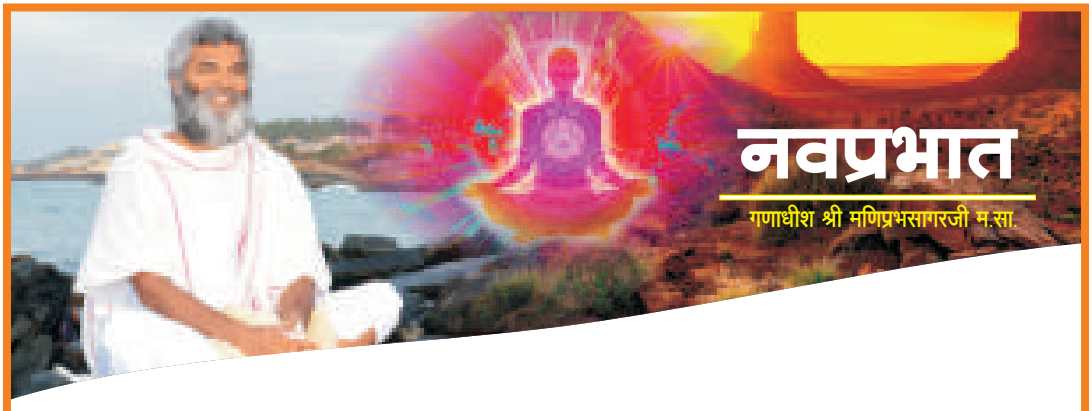

नवप्रभात

गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वाचना चल रही थी। वाचना में एक शब्द पर मन अटक गया।

वाचना के श्लोक में लिखा था– चित्त की प्रसन्नता सदैव बनी रहनी चाहिये।

भले यह गाथा साधुओं के लिये लिखी गई है। पर सबको एक रहस्य बताती हुई प्रतीत होती है।

हमारे चित्त की प्रसन्नता सकारण होती है। हम किसी निमित्त को प्राप्त करके ही प्रसन्न होते हैं। हमारी प्रसन्नता और उदासी, दोनों निमित्त–वासी है।

अर्थात् निमित्त मेरे मन का मालिक है। निमित्त ही मुझे नचाता है... निमित्त मुझे रूलाता है... निमित्त मुझे हंसाता है।

गहराई से चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि निमित्त से प्राप्त होने वाली प्रसन्नता स्थायी नहीं हो सकती। क्योंकि निमित्त क्षणिक है तो उससे प्राप्त होने वाली प्रसन्नता स्थायी कहाँ से होगी।

धन अशाश्वत है... मकान ध्वंस परिणामी है... सौन्दर्य नाशवंत है, परिणामतः इनसे प्राप्त प्रसन्नता शाश्वत कभी नहीं हो सकती।

निमित्त के आधार पर प्रसन्न होने वाला व्यक्ति सदा असह्य धोखा खाता है।

सदा सदा चित्त प्रसन्न कैसे रहे! अनुकूल अथवा प्रतिकूल हर परिस्थिति में प्रसन्नता कैसे टिकी रहे! यह प्रश्न हमारे मन में उठना चाहिये और इसके लिये प्रयत्नशील होना चाहिये।

शाश्वत प्रसन्नता का आधार बाह्य परिस्थितियाँ नहीं, अपितु आन्तरिक वैभव है। परिस्थितियाँ बदलती है परन्तु आन्तरिक वैभव कभी नहीं बदलता। वह बना ही नहीं रहता बल्कि प्रगाढ अनुभव के कारण उसकी चमक भी बढती जाती है।

अपने अन्तर के कारण प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति अपने जीवन में कभी अशांत या उदास नहीं हो सकता। वह हर परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार करता है। क्योंकि वह जानता है कि इन परिस्थितियों से मेरा कोई संबंध नहीं है। फिर मैं इनके कारण क्यों दुखी बनूं! क्यों इसमें डूबूं!

जो मेरा है... जो सदाकाल मेरा है... जो कभी मुझसे दूर हुआ नहीं... हो सकता नहीं..., मुझे उस वैभव को ही अपनी आंखों के आगे रखना है। उस अपूर्व संपदा को देख कर सदाकाल प्रसन्न रहना है।

गुरूदेव
की कहानियाँ

8

गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.

यह कैसी प्रभु की दया

एक बहुत बड़े सेठ को हर बात में ''प्रभु की दया से'' कहने की आदत थी। दुकान में लाभ होने पर, पुत्र-जन्म होने पर, कोर्ट में केस जीतने पर, कैसी भी घटना होने पर, वह हमेशा प्रभु की कृपा को ही महत्व देता था। एक बार तीर्थयात्रा करने के लिए पालीताणा पहुँचा। आपने परिवार सहित तीर्थयात्रा कर आनन्दित हुआ।

वहाँ पर आचार्य म. विराज रहे थे। वह उनके पास पहुँचा। तीर्थयात्रा का प्रसंग छिड़ने पर प्रभु की अनुकम्पा का साक्षात् उदाहरण पेश करते हुए उसने कहा ''प्रभो! मैं यहाँ तक पहुँचा, यह प्रभु की ही अनुकम्पा है। हम दस व्यक्ति घर से रवाना हुए, पर हमने 6 टिकट ही लिए। टिकट चेकर आया, उसे टिकट दिए, उसने बिना गिने ही वापस कर दिए। प्रभु क अपार दया से ही ऐसा सम्भव हो सका। यहाँ पालीताणा में हमने तो पैदल चल कर तीर्थ यात्रा की पर मुन्ने की मम्मी जरा डबल बॉडी है, अत: उसके लिए डोली की व्यवस्था करनी पड़ी। बीस रूपये में बात तय हुई। देते वक्त मैंने दस रूपये का नोट सच्चा व एक नकली पकड़ा दिया। और प्रभु का आशीर्वाद देसा कि उसने नोटों को बिना देखे ही जेब में रख लिया।''

सेठ अहो भाव से अपनी वार्ता कहता जा रहा था। खुद की चोरी को अपनी विशेषता बनाते हुए उसे प्रभु पर ढोल रहा था।

आचार्य महोदय की आँखे उस सेठ की अनैतिक वार्ता को सुनकर आश्चर्य से फैलती जा रही थी।

सेठ कहता जा रहा था-''हम भोजनशाला में गए। वहाँ दो-दो रूपये की टिकट की बात देखकर वापस आ गए। और एक बाहर से आए संघ के रसोड़े में पहुँच गए। जहाँ कार्यकर्ताओं ने हमको सानन्द भोजन करवाया। उन्होंने हमें देखकर भी नहीं पहचाना कि ये हमारे साथ के नहीं है, ये कोई दूसरे हैं। यह सब प्रभु की ही दया है।

आचार्य महोदय दया की इस अपूर्व व्याख्या को सुनकर जड़वत् हो गए। उन्होंने कहा-''सेठ! तुम अनैतिक, अन्यायपूर्ण कर्म करते हो और बीच में भगवान को घसीटते हो, यह कहाँ का न्याय है?तुम धार्मिक नहीं, परम अधार्मिक व्यक्ति हो!

सेठ को बहुत बुरा लगा और वह वहाँ से यह कहते हुए तुरन्त रवाना गया- '' भगवान की कृपा से अब कभी आपके पास नही आऊँगा।''

कहाँ जाने के लिए स्वयं को मैंने बढ़ाया?
किसे पाने के लिए पाँव को मैंने उठाया?
मैं वहीं हूँ, वे वहीं हैं कुछ नहीं बदला-
जानवर कुछ सीखता पर आदमी नहीं सीख पाया।

चातुर्मास सूची में एक पता छूट गया है-

पू. साध्वी श्री पुष्पाश्रीजी म. ठाणा 1
श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर
पो. बागबाहरा 493 449 जि. महासमुन्द (छ.ग.)
फोन 94242 06409

प्रीत की रीत

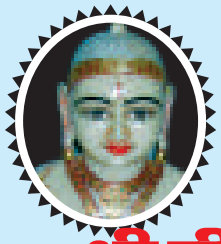

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्री शीतलनाथ स्तवन

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

सर्व द्रव्य प्रदेश अनंता,
तेहथी गुण पर्याय जी।
तास वर्ग थी अनंत गणुं प्रभु,
केवल ज्ञान कहाय जी शी.॥३॥

द्रव्यों के प्रदेश अनंत है। उनसे भी अनंत हैं उनके गुण और पर्याय! उससे भी अनंत गुणा प्रभु का केवलज्ञान है।

प्रस्तुत पद्य में केवलज्ञान की महिमा है। यद्यपि केवलज्ञान न कल्प्य है, न चिन्त्य है। परंतु वह भव्य है, अनुभव्य है, उद्‌भव्य है। केवली होकर ही जाना जा सकता है कि केवलज्ञान की भूमिका क्या है! केवलज्ञान का विवेचन जब भी किया जाता है, लगता है, अधूरा है क्योंकि शब्दों की सीमा है परंतु केवलज्ञान की कोई सीमा नहीं है। सारी बुद्धि, सारे तर्क वहाँ से लौट आते है। फिर भी विवेचन का प्रयास जारी रहा जितना भी संभव हुआ। जिस ज्ञान में सारे पदार्थ हथेली में रखी चीज की तरह अपनी समस्त गुण पर्याय सहित स्पष्ट दृष्टिगोचर हो, उसे केवलज्ञान कहते है।

संसार में जीव और अजीव सारे द्रव्य अनंत है। यद्यपि अजीव को अपने अस्तित्व का बोध नहीं होता और जीव को अपने अस्तित्व का सदैव बोध रहता है। उन जीव और अजीव द्रव्यों से भी अधिक है उनके प्रदेश! प्रदेश से भी अधिक है उन द्रव्यों के गुण और पर्याय! उन समस्त अर्थात् छह द्रव्यों को परमात्मा उनके प्रदेश उनकी गुण पर्याय समेत सहजता से जान लेते है। केवलज्ञान का शब्दिक अर्थ भी यही है कि जहाँ मात्र ज्ञान है। अज्ञात उनसे कुछ रहता ही नहीं है।

ज्ञान की परिपूर्णता ही केवलज्ञान है। हमारा ज्ञान चर्म चक्षुओं पर आधारित है। इससे भी आगे बढ़े तो वैज्ञानिक उपकरणों पर आधारित है। पर यह भी स्थूल ज्ञान है क्योंकि इसमें भी आँखों का अथवा किसी न किसी इन्द्रिय का सहयोग अपेक्षित है परंतु जिस ज्ञान में इन्द्रियों का सहयोग कतई अपेक्षित न हो, उसे ही केवल ज्ञान कहते है। यह ज्ञान ही जीव के पूर्णत्व की घोषणा है।

दार्शनिक चर्चा के अनुसार प्रदेश का अर्थ होता है- द्रव्य का एक भाग! जैसे संपूर्ण और अखंड लड्डु स्कंध है। और उसका विभाजित एक भाग प्रदेश कहलाता है। पर्याय का अर्थ है- परिणमन करना, परिवर्तित होना। जैसे मनुष्य की जन्मावस्था, युवावस्था आदि विभिन्न बदलाव को पर्याय कहते हैं। पूर्ववर्ती दार्शनिकों ने पर्याय और गुण को भिन्न माना था पर सिद्धसेन दिवाकर से प्रारंभ हुए उत्तरवर्ती दार्शनिकों ने गुण और पर्याय को अभिन्न ही माना है।

केवलदर्शन एम अनंतु,
ग्रहे सामान्य स्वभाव जी।
स्वपर अनंत थी चरण अनंतु,
स्मरण संवर भाव जी, शी. ॥४॥

जिस प्रकार आपमें अनंत ज्ञान है, उसी प्रकार आपमें अनंत दर्शन है जो कि सामान्य स्वभाव को ग्रहण करता है। स्वधर्म में रमण करने वाला अनंत चारित्र भी है। और पर भाव से रोक कर स्वभाव में रखने वाले भाव चारित्र रूप संवर की अनंतता भी आप में है।

श्रीमद्‌जी प्रस्तुत पद्य में साधना द्वारा उपलब्ध दिव्य उपलब्धियों का विवेचन कर रहे हैं। उपलब्धि का अर्थ हैं- जिस पर संपूर्ण रूप से हमारा स्वतंत्र अधिकार होना। जिस वस्तु को कोई छीन न सके जिसमें अन्य कोई तत्व बाधक न बन सके, उसे उपलब्धि कहते हैं। जीवन और जीवन में प्राप्त

वस्तुऐं हमारी क्षणिक उपलब्धि भले हो जाय अथवा उपलब्धि का भ्रम हम भले अपने मन में बसा लें परंतु वह वास्तव में उपलब्धि नहीं है। क्योंकि उस पर शासन हमारा नहीं, कर्मसत्ता का है। अत: जो इन मिथ्या उपलब्धियों का राग भाव छोड़कर वीतराग अवस्था को पा लेता है, वही वास्तव में सहज और वास्तविक उपलब्धि कही जा सकती है।

ज्ञान का अर्थ है- जानना और दर्शन का अर्थ है- देखना। प्रश्न होता है- देखने और जानने में क्या अंतर है?देखना और जानना तो साथ ही चलता है परंतु दोनों में अंतर है?शारीरिक प्रक्रिया पर हम जरा चिन्तन करें। हमारा हृदय धडकता है। निरंतर धडकनें चलती है परंतु हमें यह भी समझना होगा कि संसार की कोई भी शक्ति सतत गतिशील नहीं रहती। प्रत्येक धडकन के अंतराल में विश्राम भी अनिवार्य है। अगर विश्राम न हो तो गति भी नहीं होती। वर्तमान के विज्ञान ने भी शक्ति का रहस्य जानने के लिये घोडे पर प्रयोग किया और पता लगा कि उसकी शक्ति का आधार क्या है?घोडे की गुदा निरंतर सिकुडती है, फैलती है और यही उसकी शक्ति का रहस्य है।

चेतना की शक्ति का भी यही रहस्य है। चेतना के विस्तार का नाम है ज्ञान और सिकुडने का नाम है दर्शन! चेतना दर्शन को और दर्शन ज्ञान को जन्म देता है। किसी व्यक्ति को देखने से पूर्व कोई विकल्प न था। पर किसी को देखा और मन में विकल्प दशा जाग उठी। निर्विकल्प होता है दर्शन और सविकल्प होता है ज्ञान! अध्यात्म के सूत्रधार तीर्थंकर परमात्मा ने केवलज्ञान और केवलदर्शन की साधना की। देखा परंतु राग द्वेष की तरंगें न उठी। पानी को फिल्टर कर दिया। मिश्रित पदार्थ जुदा हो गये। पूर्ण मानव होने की गरिमा उपलब्ध हो गई। प्रभु ज्ञानी बने। उन्होंने उसकी झलक पा ली जो उनकी गहराई में छिपा हुआ था। उसे पाने के बाद जो अन्दर देखा, उसे बाहर भी देखा। उन्होंने यह अहसास कर लिया कि मैं आत्मा हूँ। अगर ज्ञान और दर्शन यथार्थ है तो आचरण में चारित्र उतरे बिना रह ही नहीं सकता।

यह गरिमा मात्र मनुष्य के पास है कि वह ज्ञान और दर्शन को चारित्र का जामा पहना सके। सृष्टि की कितनी अद्‌भुत रचना है मानव! देव के पास ज्ञान दर्शन हो सकते है पर चारित्र नहीं।

ज्ञान और दर्शन के अभाव में चारित्र थोपा हुआ होगा। ज्ञान का अर्थ इतना ही है कि मैं आत्मा हूँ। जब तक अस्तित्व का बोध न जगे, वह अनेकों व्यावहारिक अध्ययन के बावजूद बाल है और जिसे स्वयं का भान हो गया, व्यावहारिक ज्ञान में शून्य होने पर भी वह ज्ञानी है। अस्तित्व का अहसास होते ही चारित्र लिये बिना वह नहीं रहेगा।

प्रभु का दृष्टिकोण पूर्ण वैज्ञानिक है। इसीलिये तो वे सभी से प्रेम कर सके। जिस दिन आत्मीयता का इतना फैलाव हो जाय कि उसमें पानी और हवा के जीव भी समाविष्ट हो जाय तो वह कैसे उनको कष्ट पहुँचा सकेगा।

जबरन चारित्र नहीं, पाखण्ड़ पैदा हो सकता है। मानव पहले ज्ञान और दर्शन पा ले और फिर आचरण को जन्म दे तो शीघ्र ही वह अस्मिता को पूर्णता से उजागर कर सकता है।

आश्रव हैं कर्मों के आगमन का द्वार! और संवर है शुद्ध क्रियाओं द्वारा उस द्वार को बंद करना! परमात्मा में अशुद्ध अर्थात् पर द्रव्यों का योग रहा ही नहीं अत: उनकी ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूप स्वधर्म में रमणता अति आनंद दायक और अह्लाद है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

34
श्रमण चिंतन

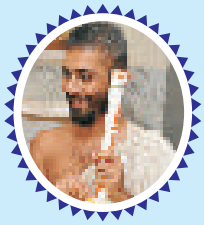

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

उत्प्रव्रजित मुनि की अन्तर्वेदना

उत्प्रवजित साधु का दु:ख इतना ज्यादा होता है कि सीमंधर स्वामी प्रदत्त चूलिका में पुन: पुन: उस मुनि की अन्तर्वेदना, परिदेवना और पश्चात्ताप का वर्णन प्रस्तुत है।

पंचमी गाथा

जया य माणिमो होइ,पच्छा होइ अमाणिमो।
सिट्ठिव्व कब्बडे छूढो,स पच्छा परितप्पइ ।।5।।

अर्थात् संयम मर्यादा में जीता हुआ साधु जहाँ विश्व मान्य होता है, वही साधु संयम मर्यादा का अतिक्रमण करके जब पुन: गृहस्थ बन जाता है, तब वह उसी प्रकार अमान्य होकर अवसाद और विषाद से ग्रस्त होता है, जैसे छोटे से ग्राम में बद्ध श्रेष्ठी।

देखो! मजबूरीवश गृहस्थ बनना अलग तथ्य है और भोगों में आसक्ति के कारण गृहस्थ बनना नितान्त अलग तथ्य है।

गृहस्थ आर्द्रकुमार भी बना था और कण्डरीक भी। आर्द्रकुमार यानि संयम की विशुद्ध साधना में रमण करने वाली साधक आत्मा। यद्यपि दीक्षा लेते समय देववाणी ने उसे सचेत भी किया था कि हे भव्य प्राणी! अभी भी तुम्हारे भोगावली कर्म अवशिष्ट हैं, अत: दीक्षित होने में शीघ्रता करना ठीक नहीं तथापि उसके हृदय-सागर में उछलती वैराग्य की ऊर्मियों से वह मोह-माया भरे संसार से इतना अलिप्तमना बना कि उसका मन उसके हाथ में न रहा। चेतावनी के बावजूद साधु बना।

श्रीमती नाम की कुमारिका के कारण संसार में आर्द्रकुमार ने चौबीस वर्ष व्यतीत किये पर मन के किसी कोने में भी इस जटिल और कुटिल संसार के प्रति राग या मोह का भाव नहीं था।

इसी प्रकार की मनस्थिति नंदीषेण मुनि की भी थी, अन्यथा वे कभी भी इस प्रकार का अभिग्रह धारण न करते कि प्रतिदिन दस व्यक्तियों को प्रतिबोधित करने के बाद ही अन्न-जल स्वीकार करूंगा, अन्यथा नहीं।

उसके चेहरे पर छितरा गहरा पश्चात्ताप... शब्दों में बोलती संसार में प्रवेश के प्रति अन्तर्व्यथा! उच्च अभिग्रह से झलकती चारित्र के प्रति अटूट श्रद्धा और समर्पण की रश्मियाँ।

कितने ही महिनों तक वह लोगों को प्रतिबोध देता रहा पर किसी ने दबी जुबान से भी नहीं-भाई साहब! तुम मुझे संयम का उपदेश देने चले हो पर कभी खुद का जीवन भी देखा है।

दूसरों की छत पर पडी गंदगी और कचरे के कारण झल्लाने-चिल्लाने वाले को पहले अपने घर की दहलीज पर पडी अशुचि और कचरे पर नजर डालनी चाहिये पर नंदीषेण का आन्तरिक अनुताप और मानसिक कष्ट इतना सघन था कि अनेक भव्यात्माएँ उसकी वैराग्य की विभा से प्रभावित हो जाते।

आर्द्रकुमार और नंदीषेण घर में रहकर भी कभी धिक्कार के पात्र नहीं बने पर कण्डरीक की दयनीय हालत तो देखो! कोई भी उसे राजा के रूप में मान्य करने को तैयार नहीं था। बाहर में भले ही व्यंजन परोसे जाते पर भीतर तो गालियों से भरा हुआ था। कण्डरीक की मूढता पर किसी को हँसी आती तो किसी को क्रोध। कोई उसे पागल मानता तो कोई व्यंग्य कसता।

इन अपमानजनक स्थितियों ने मानसिक रूप से रूग्ण किया... आर्त्त और रौद्र ध्यान के लिये प्रेरित किया, दूसरी ओर तपस्वी काया स्वादिष्ट, मिष्ट और गरीष्ठ आहार स्वीकार करने को राजी नहीं थी पर आसक्ति के मोहजाल से उसे शारीरिक बीमारियों के भंवरजाल में डाल दिया, आखिर तीन दिन के बाद कण्डरीक मरकर नरक का मेहमान बना।

ऐसी करूणार्द्र स्थिति देखकर भला किसका चित संसार के भोगों में आसक्त बनेगा। नगर-नगर सुखपूर्वक परिभ्रमण करने वाले महाश्रेष्ठी को अगर कोई छोटे से गाँव की चार दीवारी में कैद कर ले तो उसकी अन्तरात्मा उसे भला कैसे स्वीकार कर पायेगी?वैसे ही परमात्मा की आज्ञा के खुले नभ में विचरण करने वाली संयमी चेतना संसार के बंधनों को कैसे स्वीकार करेगी अर्थात् स्वीकार नहीं कर पायेगी।

पूज्य गच्छाधिपतिजी ने की घोषणा

खरतरगच्छ महासम्मेलन पालीताना में 1 मार्च से 12 मार्च 2016 तक

लम्बे समय के बाद खरतरगच्छ श्रमण महासम्मेलन पालीताना में होने जा रहा है। यह सम्मेलन 1 मार्च से प्रारंभ होगा, जो 12 मार्च तक चलेगा।

इस प्रकार की घोषणा पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय के खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने रायपुर प्रवेश के दिन ता. 25 जुलाई को की। पूज्यश्री द्वारा सम्मेलन के स्थान व तिथियों की की गई घोषणा पर उपस्थित विशाल जनसमूह ने जय जयकार के नादों से बधाया।

पूज्यश्री ने कहा– समस्त साधु साध्वियों से विचार विमर्श कर इस क्षेत्र का चुनाव किया गया है। हॉलाकि सम्मेलन आयोजित करने के लिये जयपुर, मालपुरा, रायपुर, भद्रावती, जालना, नगपुरा आदि स्थानों की विनंतियॉ चल रही थी। पर अधिकतर साधु साध्वियों की सुविधा, विहार, व्यवस्थाऐं आदि के आधार पर पालीताना का चुनाव किया गया है।

इस सम्मेलन में 1 मार्च से 9 मार्च तक केवल साधु साध्वियों का सम्मेलन होगा, जिसमें गच्छ विकास, व्यवस्थाऐं, समाचारी आदि विविध विषयों पर विचार विमर्श कर निर्णय किया जायेगा।

ता. 10 से 12 मार्च तक श्रावक सम्मेलन का आयोजन होगा। सम्मेलन की विस्तृत जानकारी बाद में दी जायेगी।

आप्त अमृतम्

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

मृत्यु को बनाये जीवन का उत्सव

मृत्यु जीवन की अवश्यंभावी घटना है। शास्त्रकार महर्षि कहते हैं-''जातस्य ध्रुवो हि मृत्युः।'' मृत्यु संसार का अटल सत्य है। सम्राट् हो या फकीर, साधु हो या संसारी,हर जीव को मृत्यु का सामना करना ही होता है।

जीवन धागा नहीं जुड़ता -

किसी वस्तु के दो टुकडे हो जाये या कोई पदार्थ खण्डित हो जाये तो उसे विविध उपायों से जोड़ा जा सकता है। अगर वस्त्र फट जाये तो सिलाई संभव है, धागा टूट जाये तो गांठ लगायी जा सकती है परन्तु जीवन का धागा टूट जाने पर पुनः नहीं जुड पाता-न हं संखयमाहु जीवियं। इन्द्र, चक्रवर्ती, वासुदेव तो क्या, अनन्त शक्तिशाली तीर्थंकर भी मृत्यु को अन्यथा करने में असक्षम हैं।

आखिर मृत्यु किसकी?

आचारांग सूत्र कहता है- 'सव्वे जीवा पिआउआ' सभी जीवों को जीवन प्रिय है, हर जीव जीना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता। ''मरण समं नत्थि भयं'' मरण जैसा कोई महाभय इस ससांर में नहीं है। मृत्यु शब्द से हर जीवात्मा भय खाता है परन्तु वे साधक आत्माएं जिन्होंने मृत्यु का रहस्य और स्वरूप समझ लिया है, वे निर्भयतापूर्वक मृत्यु को स्वीकार करते हैं।

'मृत्यु शरीर की होती है, आत्मा की नहीं।' यह शाश्वत संदेश जिसकी हृदय डायरी में स्थापित हो गया है, उनके लिये मृत्यु न तो खौफनाक है, न कोई दुर्घटना है, वे उसे एक नियत घटना के रूप में अंकित करते हैं और मृत्यु को महोत्सव का रूप दे जाते हैं।

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है-

वासांसि जीर्णाणि यथा विहाय
नवानि शरीराणि नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय,
जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार वस्त्रों के जीर्ण-शीर्ण हो जाने पर व्यक्ति उनका त्याग करके नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार देह के निर्बल, अक्षम हो जाने पर देहधारी उसे छोड़कर नूतन शरीर धारण करता है।

भय का जनकः मोह

निर्भय की साधना वही कर सकता है जो निर्मोही हो। जब तक काया से मोह और स्नेह के तार जुड़े रहते हैं, उसके प्रति रागात्मक दृष्टिकोण बना रहता है, तब तक मृत्यु से व्यक्ति घबराता है पर जैसे-जैसे शरीर और जीव का भेद विज्ञान समझ में आता है, वैसे-वैसे व्यक्ति दैहिक वेदनाओं-संवेदनाओं से उपर उठता हुआ देहातीत बनता जाता है। काया से जुडे हुए मूर्च्छा के सूक्ष्म किन्तु सुदृढ धागे टूटते जाते हैं। अन्ततोगत्वा एक ऐसा महत्वपूर्ण क्षण आता है, जब व्यक्ति मृत्यु से पूर्णरूपेण निडर हो जाता है। फिर न शरीर के प्रति राग रहता है, न मौत का खौफ।

मरना भी एक कला है-

जीवन निर्माण एवं निर्वाह की विविध कलाओं का दर्शन अनेक धर्म दर्शनों में होता है परन्तु अर्हत् प्ररूपित धर्म दर्शन की यह विलक्षणता है जहाँ जीवन के साथ मरण की कला का भी दीदार होता है।

जिनदर्शन कहता है- जब मृत्यु निश्चित है फिर क्यों न

कलात्मक ढंग से मरण का वरण किया जाये। कीट पतंग की भांति मोह-मूढ होकर मरने से अन्त समय बिगड जाता है और मोह मुक्त होकर मरने से मृत्यु महोत्सव बन जाती है और भव परम्परा का क्षय हो जाता है।

उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीसवें अध्ययन का कथन है- जो शस्त्र, विषभक्षण, अग्नि-शरण अथवा जल मे कूदकर आत्म हत्या करता है, वह जन्म-मरण की परम्परा को बढ़ाता है।

मरण के प्रकार-

उत्तराध्ययन सूत्र में मरण के दो भेदों का निर्देश किया गया है- 'अकाम मरणं चेव सकाम मरणं तहा' (1) अकाम मरण (2) सकाम मरण।

इन्द्रिय विषयों में गृद्ध... आसक्त बना हुआ जो व्यक्ति जीना चाहता है परन्तु मृत्यु के सम्मुख लाचार एवं बेबश होने से उद्विग्न चित्त से मरण को प्राप्त करता है, उसका अकाम मरण कहलाता है।

अकाम मरण से विपरीत जिस व्यक्ति में न जीने की तमन्ना है और न मृत्यु का भय है और जो समाधिपूर्वक मृत्यु को स्वीकार करता है, उसका सकाम मरण कहलाता है।

उत्तराध्ययन सूत्रानुसार 'बालाणं अकाम तु मरणं असई भवे।' अज्ञानी / बाल जीवों का अकाम मरण बार-बार होता है परन्तु 'पण्डियाणं सकामं तु उक्कोसेण सइं भवे' पण्डितों का सकाम मरण उत्कृष्टत एक बार ही होता है। शास्त्रों में तीन प्रकार के मरण का वर्णन प्राप्त होता है-

1. **बाल मरण**- मिथ्यात्वी जीवों का बाल मरण कहलाता है। वे अभागे बाल जीव जिन प्रवचन से परिचित न होने से अनेक बार बाल/ अकाम: मरण को प्राप्त करते हैं।

2. **बाल पण्डित मरण**- देशविरत (श्रावक) का बाल पण्डित मरण कहलाता है।

3. **पण्डित मरण**- सर्वविरत साधुओं का पण्डित मरण कहलाता है। सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है- 'मरणं हेच्च वयंति पंडिया' पण्डित पुरूष मृत्यु की दुर्दम सीमा को लांघकर अविनाशी पद को प्राप्त कर लेते हैं।

समवायांग सूत्र में मरण के सतरह भेद इस प्रकार नामांकित किये गये हैं-

1. आवीची मरण 2. अवधि मरण 3. आत्यन्तिक मरण 4. बलात् मरण 5. वशार्त मरण 6. अंत: शल्य मरण 7. तद्भव मरण 8. बाल मरण 9. मिश्र मरण 10. छद्मस्थ मरण 11. केवली मरण 12. वेहायस मरण 13. गृद्धपृष्ठ मरण 14. भक्तपरिज्ञा मरण 15. पंडित मरण 16. इंगिनी मरण 17. पादपोपगमन मरण।

जीवन का लक्ष्य यही है कि जीवात्मा जीवन पर्यन्त मृत्यु से निर्भीक रहे और कलात्मक शैली से आचार-विचार सजाकर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ले।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह तीन साल बाद मालपुरा में

पूज्य गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने रायपुर चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर घोषणा करते हुए कहा– आगामी तीन साल बाद वि. संवत् 2075–76 में खरतरगच्छ के उद्भव को एक हजार साल पूरे हो रहे हैं। वि. 1075–76 में आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि महाराज को पाटण नरेश दुर्लभ राजा ने **खरतर** बिरूद प्रदान किया था, तब से चन्द्र गच्छ का नाम खरतरगच्छ हुआ। उस परम्परा को निर्बाध रूप से चलते एक हजार वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में सहस्राब्दी का आयोजन करना है।

यह आयोजन दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रत्यक्ष दर्शन स्थली मालपुरा में किया जायेगा। इस आयोजन की रूपरेखा सम्मेलन में निश्चित की जायेगी।

समाचार दर्शन

रायपुर में पूज्यश्री का चातुर्मास प्रवेश संपन्न

छत्तीसगढ की राजधानी रायपुर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभ सागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्रेयांसप्र भसागरजी म. पूज्य बालमुनि मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. विज्ञांजनाश्रीजी म. पू. निष्ठांजनाश्रीजी म. पू. आज्ञांजनाश्रीजी म. ठाणा 6 का चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश ता. 25 जुलाई को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

प्रवेश के अवसर पर बाहर गांवों से बडी संख्या में गुरु भक्तों का पदार्पण हुआ। प्रवेश शोभायात्रा का प्रारंभ सदर बाजार ऋषभदेव जैन मंदिर से हुआ, जो शहर के मुख्य मार्ग– सत्तीबाजार, तात्यापारा चौक, बढई पारा, रामसागर पारा, गुरुनानक चौक होती हुई दादावाडी पहुँची, जहाँ अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा– 36 गढ में चातुर्मास होने जा रहा है। वैसे आम विचार धारा में 36 के आंकडे को शुभ नहीं माना जाता। लोग 63 के आंकडे को महत्व देते हैं। किन्हीं दो के बीच मतभेद हो तो हम इस मुहावरे का प्रयोग करते हैं– इन दो के बीच 36 का आंकडा है।

पर मैं 36 के आंकडे को बहुत महत्व देता हूँ। 36 में दोनों अंक अलग अलग दिशाओं की ओर मुख किये हैं। और 63 में आमने सामने हैं। मैं

कहना चाहता हूँ– लडाई जब भी होती है, आमने सामने ही तो होती है। आज दिन तक ऐसा किसी ने नहीं देखा सुना होगा कि दो आदमी जो लड रहे हैं, वे अलग अलग दिशाओं की मुख किये खडे हैं।

36 का आंकडा सुरक्षा देता है। एक ने एक दिशा सम्हाल ली है, दूसरे ने दूसरी दिशा! बीच में हम सुरक्षित हैं।

इस अवसर पर पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा– आज का वातावरण देख कर लगता है कि मरूधर मणि छत्तीसगढ का मणि बन गया है। मोकलसर का नंदन रायपुर का नंदन बन गया है। उन्होंने चार महिने तक चलने वाले लाईफ मेनेजमेंट सेशन में जुडने की बात कही। समारोह का सफल संचालन करते हुए पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के जीवनप्रसंगों को सुनाकर सभी को तन्मय कर दिया। उन्होंने कहा– छत्तीसगढ के लोग श्रद्धा, प्रेम, अपनत्व और भक्ति से परिपूर्ण है। निश्चित ही 36 का आंकडा अखण्ड प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक है। श्री विचक्षण महिला मंडल, संभव संस्कार सुरभि ज्ञान वल्लभ पाठशाला, आदीश्वर बहु मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किये।

श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने पेढी की रूपरेखा प्रस्तुत की। श्री तिलोकचंदजी बरडिया, श्री सुरेशजी कांकरिया ने स्वागत भाषण दिया।

तिरूपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड परिवार की ओर से कामली ओढाने का लाभ लिया गया। सांचोर निवासी श्री मनोहरजी फूलचंदजी बोथरा कानूगो ने गुरुपूजन का लाभ लिया। श्री संतोष गोलेच्छा महासचिव ने धन्यवाद दिया। इस अवसर पर छत्तीसगढ के धमतरी, महासमुन्द, दुर्ग, राजनांदगांव, भिलाई, खैरागढ, दल्लीराजहरा, वैशालीनगर, डोंगरगांव, चौकी, मोहला, मानपुर, बागबाहरा, खरियार रोड,

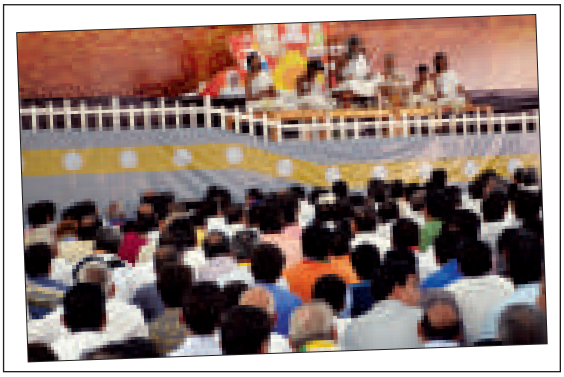

पंडरिया, मुंगेली, कोमाखान, कांकेर, कोंडागांव, जगदलपुर, बालाघाट, गोंदिया आदि संघों की बडी संख्या में उपस्थिति थी।

इसके अलावा चेन्नई, मुंबई, अहमदाबाद, बाडमेर, चौहटन, पाली, बालोतरा, ब्यावर, तिरूपातूर, कोयम्बतूर, ईरोड, तिरूपुर, सूरत, चितलवाना, कारोला, सिणधरी, सांचोर, जोधपुर, जयपुर, बैंगलोर, नंदुरबार, सिवनी, इचलकरंजी, नवसारी, पूना, दिल्ली, बिजयनगर, भायंदर, भिवण्डी, नाशिक, जैसलमेर, इन्दौर, उज्जैन, उदयपुर, बल्लारी, शहादा, फलोदी, मल्हार पेठ आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालुओं का पदार्पण हुआ। दुर्ग संघ, बिजयनगर संघ, उज्जैन संघ, इचलकरंजी संघ, दिल्ली संघ, बाडमेर संघ आदि संघों ने पूज्यश्री से आगामी चातुर्मास अपने क्षेत्र में करने की भावभरी विनंती की।

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

दुर्ग में खरतगच्छाधिपतिजी का पदार्पण हुआ

खारतरगच्छाधिपति उपाध्याय गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी विद्युतप्रभाश्रीजी म.सा. अपनी शिष्या मंडली के साथ दुर्ग (छ.ग) स्थित ऋषभदेव परिसर में 21 जुलाई को पदार्पण हुआ। प.पू. गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने अपने हृदय स्पर्शी प्रवचन में धर्मसभा के समक्ष खरतरगच्छ को चार साधु भगवंत देने वाले दुर्ग श्रीसंघ एवं परिवार के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते हुए छ.ग. में दुर्ग श्रीसंघ का प्रथम अधिकार निरूपित किया।

क्षेत्र स्पर्शना के प्रबल संयोग एवं छाजेड परिवार, पद्मनाभपुर के अनुग्रह पर प. पू. उपाध्याय प्रवर का अपने शिष्य मंडली एवं पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का पद्मनाभपुर स्थित छाजेड सदन की ओर विहार हुआ। जयकारों एवं बैण्ड बाजे के धुनों के साथ उस समय अद्भूत वातावरण निर्मित हो गया जब स्थानकवासी परंपरा के लोकमान्य संत छ.ग. प्रवर्तक पू. मुनि श्री रतनमुनिजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर का आत्मीय मिलन हुआ। पू. रतनमुनिजी म.सा. ने पोथी एवं काम्बली भेंट कर उपाध्याय प्रवर का आत्मीय सत्कार किया। छाजेड़ परिवार की भावनानुसार उपाध्याय प्रवर का श्रीमती शांतिदेवी छाजेड के निवास स्थान-छाजेड़ सदन में मंगल प्रवेश हुआ।

छाजेड़ परिवार के सदस्यों ने गवली एवं बधाकर अपनी खुशी जाहिर की। चतुर्विध संघ के मध्य छाजेड़ परिवार ने आनंदित एवं पुलकित हृदय से वैयावच्च का लाभ लिया। पूज्य उपाध्याय प्रवर ने पगलिया - आशीर्वाद प्रदान कर छाजेड़ परिवार के सपनों को मूर्त रूप दिया। उपस्थित सम्माननीयजनों के साधर्मी वात्सलय का लाभ भी छाजेड़ परिवार ने लिया। समस्त कार्यक्रमों को सम्पन्न कर पू. उपाध्याय प्रवर ने अपने शिष्य संपदा के साथ गंतव्य की ओर चतुर्विध संघ के साथ विहार किया।

चातुर्मास जीवन, व्यवहार एवं सोच बदलने के लिए – मुनि मनोज्ञसागर

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के वसीमालानी रत्न शिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. एवं मुनि नयज्ञ सागर जी म.सा आदि ठाणा –2 का भव्य शोभायात्रा के साथ चातुर्मास नगर प्रवेश बीकानेर की धरा पर सम्पन्न हुआ। प्रवेश के दौरान बीकानेर नगर को भव्य रूप से सजाया गया। शोभायात्रा के जुलुस की आभा देखते ही नजर आ रही थी। कुशल दर्शन मित्र मण्डल के पारसमल गोठी एवं कपिल मालू ने बताया कि शोभायात्रा शहर खंचाजी मार्केट से प्रारम्भ हुई जो शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई रांगडी चौक सुगनजी महाराज के उपाश्रय पहुंची। मालू ने बताया कि शोभायात्रा में मंगल कलश धारण किये महिलाऐं चातुर्मास के गीत गाते हुए चल रही थी वही बीकानेर के प्रसिद्ध बैण्ड की ओर से धर्म की प्रभावना करते हुए मंगल गीत की स्वर लहरियां माहौल को धर्ममयी बना रही थी। शोभायात्रा में साथ चल रहे श्रावक श्राविकाएं भगवान महावीर के जयकारें एवं गुरूजी मारो अर्न्तनाद अमने आपो आर्शीवाद की जय घोष से बीकानेर नगरी धर्ममय हो गई। उपाश्रय पहुंचने के बाद शोभायात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। इस अवसर पर मुनि मनोज्ञ सागर ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्षावास में बरसने वाली निर्मल बारिश की तरह अपने मन को भी निर्मल करने का समय है। उन्होने कहा कि बीकानेर की धन्य धरा पर उनका ये तीसरा चातुर्मास है। इससे पूर्व वर्ष 1995 व 1999 में चातुर्मास किया था। उन्होने बीकानेर में हुए पूर्व के चार्तुमास के कुछ यादगार पल भी बताये। उन्होने कहा कि बीकानरे की धरा से उन्हे बहुत लगाव है। चातुर्मास जीवन, व्यवहार ,वाणी व सोच परिवर्तन के लिए है। आज की आधुनिक युग में अपने लिये समय नही होता पर कुछ समय अपने लिये निकालते हुए अपने आप को ईश्वर से जोडकर देख स्वयं ही ईश्वर से आप का जुडाव हो जायेगा। इस अवसर पर खरतरगच्छ संघ के पूर्व मंत्री घेवरचन्द मुसरफ, छगनलाल भूगडी, मोतिलाल मालू, केवलचन्द छाजेड़, महेन्द्र बाफना, अनुपलाल मणिकपुरी सहित कई लोगो ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए चार्तुमास में अपने आप का धर्म से जोडने की बात कही। इस अवसर पर देशभर से गुरूभक्त गुरूदेव के प्रवेश में शामिल हुए।

फलोदी में चातुर्मास प्रवेश उल्लास के साथ हुआ

परम पूज्य गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी के आज्ञानुवर्ती सरल स्वभावी मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व प्रवचनकार मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. का फलोदी में चातुर्मास हेतु 22 जुलाई 2015 को भव्य प्रवेश हुआ। प्रवेश जुलुस स्थानीय हायर सैकण्डरी स्कूल के पास से बैंड बाजों के साथ धूम धाम से पार्श्वनाथ जिनालय मार्ग होते हुए कन्हैयालालजी भंसाली (मनीषप्रभसागरजी म. के सांसारिक पिताजी) के निवास के आगे से निकला। वहां पर भंसाली परिवार ने संघ का स्वागत कर संघ पूजन किया। त्रिपोलिया बाजार से होते हुए जुलूस चुडीगरों के मोहल्ले स्थित बड़ी धर्मशाला में पहुँचा।

रास्ते में जगह-जगह पर मांगलिक गहुंली करते हुए महाराज साहब का बधामणा किया गया। बड़ी धर्मशाला में पहुंचकर जुलुस धर्म सभा में परिवर्तित हुआ।

धर्म सभा में मुनि मनीषप्रभसागरजी ने कहा कि आज पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से यहां चातुर्मास हेतु प्रवेश हुआ है। फलोदी मेरी जन्म भूमि, मेरे गुरूओं की कर्म स्थली है। ऐसी जगह पर मुझे चातुर्मास करने का सौभाग्य मिला है जिसका मुझे स्वाभाविक उल्लास है। यहां पर तपस्या की झड़ी लगे। सभी धर्म से जुड़े, बच्चों में अच्छे संस्कार के लिये शिविरों का आयोजन करावे ताकि चातुर्मास सफल हो सके यही मेरी मगंल भावना है। जहां के कण-कण में अपनत्व की सुगंध है। जिस भूमि को साहित्यकारों ने स्वर्ग से भी बढकर बताया हुआ है। फलोदी नगर की जिनशासन में अनुठी छाप रही है। चातुर्मास में हमें आराधना, साधना, तपस्या करने के साथ हमारी चित्त शुद्धि पर भी जोर देना है।

प्रवेश समारोह को निहारने बाहर गांव से अनेक गणमान्य अतिथि पधारे। बाड़मेर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष रतनचन्दजी संखलेचा, चौहटन से केसरीमलजी धारीवाल, जैसलमेर से महेन्द्र भाई बापना, लोहावट से घेवरचन्दजी पारख, जोधपुर से निलेशजी भसांली, बीकानेर से डागाजी, मुम्बई से प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल आदि का बहुमान किया गया। सभी मेहमानों का स्वागत किया गया। सभी महानुभावों ने अपने वक्तव्यों में मुनिजी को वंदन करते हुये चातुर्मास के सफल होने की शुभकामना दी। चौहटन संघ ने कहा कि हमारे गांव में संपन्न पिछला चातुर्मास व ऐतिहासिक उपधान तप की आराधना की यादें आज भी तरोताजा है। उल्लेखनीय है कि मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. की जन्म भूमि फलोदी है। 28 वर्ष पूर्व इन्होंने पादरू में दीक्षा लेने के बाद फलोदी में चातुर्मास करने हेतु प्रथम बार पधारे है। जिससे पूरे गांव को आज हर्ष है। धर्म सभा में महावीर महिला मण्डल, पदम पुष्प मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संस्कार वाटिका के महावीर, मोहित कोठारी बंधुओं ने नृत्य के साथ स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

-मूलचन्द कोठारी

राजनांदगांव में भव्य आयोजन
छत्तीसगढ प्रवेश का अनूठा समारोह

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 11 के छत्तीसगढ प्रान्त में प्रथम बार पदार्पण पर संपूर्ण छत्तीसगढ की ओर से पूज्य गुरुवरों का भव्य स्वागत किया गया।

पूज्यश्री ने ता. 6 जुलाई को चन्द्रपुर से विहार किया। वहॉ से गढचिरोली, मानपुर, मोहला, चौकी, डोंगरागाँव, अर्जुनी होते हुए ता. 18 को राजनांदगांव के उपनगर वर्धमान नगर में पधारे, जहॉ श्री संजयजी सिंघवी परिवार की ओर से पूज्यश्री का भव्य अभिनंदन किया गया। उनकी ओर से श्री देव आनंद स्कूल में सार्वजनिक प्रवचन का आयोजन किया गया।

ता. 19 जुलाई को राजनांदगांव शहर में पदार्पण हुआ। जहॉ राजनांदगांव श्री संघ सहित संपूर्ण छत्तीसगढ संघ की ओर से पूज्यश्री का भव्य अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ राज्य के मुख्यमंत्री माननीय डॉ. श्री रमणसिंहजी थे। अध्यक्षता परिवहन मंत्री श्री राजेशजी मूणत ने की। श्री मूणतजी रायपुर चातुर्मास समिति के संरक्षक है। समारोह में सांसद श्री अभिषेकसिंह, महापौर श्री मधुसूदन यादव, निगम अध्यक्ष श्री शिव वर्मा, पूर्व पार्षद घनश्याम साहू, पूर्व महापौर एवं श्री जैन संघ राजनांदगांव के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र डाकलिया सहित अनेक गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने संपूर्ण छत्तीसगढ राज्य की ढाई करोड जनता की ओर से पूज्यश्री को कामली ओढाते हुए पूज्यश्री का भावभीना अभिनंदन किया। उन्होंने कहा– मैं यहॉ रायपुर चातुर्मास में पधारने की विनंती लेकर आया हूँ। आपका आगमन हमारे लिये पावन अवसर है।

उन्होंने कहा– छत्तीसगढ में जैन धर्म की गौरवशाली परम्परा रही है। प्राचीन अवशेष जो उपलब्ध हो रहे हैं, वे इस बात के प्रमाण हैं। उन्होंने जैन समाज की प्रशंसा करते हुए कहा– छत्तीसगढ के विकास में जैन समाज का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस अवसर पर पूज्य श्री ने प्रवचन में फरमाया– आज मैं खरतरगच्छ की राजधानी में आया हूँ। छत्तीसगढ हमारे गच्छ की राजधानी है। पूज्य आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरिजी म., पूज्य प्रभाकरसागरजी म., महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. आदि ने इस क्षेत्र को अपनी मेहनत से संस्कारों की फसल से हराभरा बनाया है। यह उनकी ही देन है जो आज छत्तीसगढ में धर्म का वातावरण नजर आ रहा है।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा– चातुर्मास हेतु पूज्यश्री का पदार्पण हो रहा है। चातुर्मास में हमें अपने जीवन का परिवर्तन करना है।

इस अवसर पर रायपुर ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री तिलोकचंदजी बरडिया, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुरेशजी कांकरिया, महासचिव श्री संतोषजी गोलेच्छा, राजनांदगांव के अध्यक्ष श्री नरेशजी डाकलिया ने पूज्यश्री का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम का संचालन ओम आचार्य ने किया। तीन घंटे चले इस विराट् समारोह में पूरा छत्तीसगढ जैसे उमड पडा था।

बहेगी तप आराधना की अविरल धारा– कपिल मालू ने बताया कि चार्तुमास के दौरान पयुषर्ण महापर्व पर विशेष तौर से तप आराधना की अविरल धारा बहेगी वही चार माह तक दैनिक प्रवचन के साथ साथ महापूजन सहित कई आयोजन होगे। मालू ने बताया कि चार के दौरान धर्म के साथ साथ पारिवारिक, सांसरिक, ज्ञान, तप, मन की सुन्दरता सहित कई विषयों पर प्रवचन माला का आयोजन होगा।

दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि मनाई गई

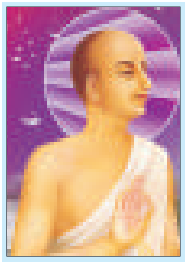

पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. आदि की सानिध्यता में प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की 861वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में गुरुदेव के दिव्य व्यक्तित्व व कृतित्व का विस्तार किया।

संचालन करते हुए पूज्य मनितप्रभसागरजी म. ने घटनाओं के आधार दादा गुरुदेव के जीवन की घटनाओं को सुनाया। पूज्य श्रेयांसप्रभसागरजी म. ने दादा गुरुदेव की दीक्षा से संबंधित घटना सुनाई। पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने दादा गुरुदेव से जुडे अपने अनुभव सुनाये। पू. साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म., पू. निष्ठांजनाश्रीजी म., श्री जयकुमारजी बैद ने भी दादा गुरुदेव के गुणगान किये। दोपहर दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। रात्रि में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

सीडी का विमोचन

पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म. के इचलकरंजी में संपन्न हुए चातुर्मास में उनके द्वारा दिये गये प्रवचनों की डीवीडी का विमोचन श्री संघ इचलकरंजी द्वारा किया गया। इस डीवीडी में पर्युषण महापर्व तक के समस्त प्रवचनों को शामिल किया गया है।

सोलापुर नगर में भव्य प्रवेश

परम पूज्य खरतरगच्छा धिपति गुरूदेव उपाध्याय भगवंत मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरूवर्या सुलोचना श्रीजी म.सा., प्रीतियशा श्री जी, प्रियकल्पना श्री जी म.सा. आदि ठाणा 8 का सोलापुर नगरी में मंगलमय वर्षावास हेतु भव्यातिभव्य प्रवेश द्वितीय आषाढ शुक्ला 9 दिनांक 25 जुलाई 2015 शनिवार को हुआ। पूज्याश्री 24 जुलाई को कुशल आराधना भवन

में विराजे। वहां से 25 ता. को प्रात: 8 बजे भव्य शोभायात्रा प्रारंभ हुई। शोभायात्रा में मंगलकलश, स्कूल के बालक बालिकाएं, रथ में परमात्मा की तस्वीर, शहनाई बैंड बाजे थे। गाते-बजाते धूमधाम, जयघोष के साथ सम्राट चौक, मंगलवार पेठ होते हुए जोड भावी पेठ स्थित आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर में पहुंचे। वहां व्याख्यान हॉल में धर्मसभा हुई।

शांतिजिन महिला मंडल, पद्मावती महिला मंडल, बालक मंडल, बालिका मंडल, सुभाषजी गुलेच्छा, चन्द्रकलाजी गुलेच्छा आदि ने भव्य स्वागत अभिनंदन गीतों द्वारा पूज्या श्री को बधाया और स्वागत किया। पिंकी कवाड तिरूपात्तूर टीना सोलापुर ने प्रवेश प्रसंग को रोचक शानदार संवाद किया। तत्पश्चात् प्रियश्रुतांजना श्री जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आपके गृहांगन में जायी जन्मी पली आपकी बटी आई है इसलिए आपको खुशी है किन्तु में चाहती हूँ आप चातुर्मास में अच्छी आराधना करके अपने जीवन को परिवर्तन करेंगे तभी मुझे खुशी होगी। साध्वी प्रियश्रेयांजना श्री जी ने बताया दीक्षा के पश्चात् 13 वर्ष के बाद पहली बार में सोलापुर आई हूँ। चातुर्मास का महात्मय बाताया और आराधना साधना में आगे बढना। पूज्याश्री गुरूवर्या सुलोचनाश्री जी ने फरमाया यह चातुर्मास आपको प्रेरित कर रहा है कि पर घर से लोटकर आत्म घर में लोटना है, आठ महिनें तक आप व्यापार घर, दुकान में व्यस्त रहते है अब चार महिना तो केवल और केवल आत्म व्यापार में ही व्यस्त रहना है।

धर्मसभा का संचालन संघमंत्री कल्पेश मालू के किया। पूज्याश्री को कामली ओढाने तथा गुरूपूजा करने का चढावा श्री जवरीलालजी गोतमचन्दजी मोहनलालजी नरेशजी रतनजी वैद हुडिया (पू. प्रियश्रुंताजना श्री जी म.स का सांसारिक परिवार) ने लिया और चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी का लाभ भी इसी परिवार ने लिया। कार्यक्रम के पश्चात् साध्वीजी के सांसारिक परिवार की ओ चांदी की अभिमंत्रित अंगुठी की प्रभावना और अनेको परिवार की ओर से संघ पूजा तथा श्रीसंघ के ओर से साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन रखा गया। श्री संघ के द्वारा आदेश्वर जैन श्वेताम्बर मंदिर, शांतिनाथ भगवान का मंदिर और शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर में दिनांक 23 से 25 जुलाई 2015 को त्रिदिवसीय अढारह अभिषेक महापूजन रखा गया। कनुभाई मास्टरजी ने विधि विधान कराया।

राजनांदगांव में प्रवेश संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. विभांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 का राजनांदगांव छ.ग. में चातुर्मास हेतु प्रवेश ता. 27 जुलाई 2015 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

प्रवेश शोभायात्रा का प्रारंभ गायत्री मंदिर दिल्ली दरवाजा से हुआ जो कामठी लाईन, सदर बाजार, जैन मंदिर होती हुई ज्ञान वल्लभ उपाश्रय पहुँची।

सभा को संबोधित करते हुए अपने प्रभावशाली प्रवचन में पू. नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने चातुर्मास को धर्म आराधना द्वारा पूर्ण सफल बनाने का उपदेश दिया। उन्होंने दादा गुरुदेव के जीवन का विश्लेषण किया।

इस अवसर पर श्रीमती सुप्रिया बेलावाला, पार्श्व चिंतामणि भक्ति ग्रुप ने गीतिकाऐं प्रस्तुत की। संघ अध्यक्ष श्री नरेशजी डाकलिया, चातुर्मास संयोजक श्री तिलोकचंदजी बैद, मंत्री रितेश लोढा, कोषाध्यक्ष गौतमजी कोठारी, श्रीमती डाली बैद आदि ने पूजनीया गुरुवर्या का अभिनंदन किया। श्री शांतिविजय सेवा समिति पार्श्वनाथ जैन मंडल के मधुर संगीत के साथ प्रवेश संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली, बिजयनगर, बाडमेर, इचलकरंजी आदि काफी स्थानों से भक्तगणों का आगमन हुआ। दिल्ली के श्री हीरालालजी मुसरफ, श्रीमती गुलाबकंवर नाहटा, इचलकरंजी से गौतमजी वडेरा, बाडमेर खरतरगच्छ संघ अध्यक्ष श्री रतनलालजी संखलेचा, बिजयनगर से पवनजी आदि ने अपनी वंदनाऐं पूजनीया गुरुवर्या के श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

राजनांदगांव श्री संघ की ओर से अतिथि गणों का स्वागत किया गया। समारोह का संचालन रितेश लोढा ने किया।

धमतरी में नगर प्रवेश सम्पन्न

धर्म नगरी धमतरी नगर में साध्वी डा. शासनप्रभा श्रीजी आदि ठाणा का सोमवार को मंगल प्रवेश सानंद सम्पन्न हुआ। उनके सम्मान में जयकारों के साथ शोभायात्रा दादावाडी से शुरू हुई। जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत किया गया। यह शोभायात्रा शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुई इतवारी बाजार स्थित पार्श्वनाथ मंदिर में समाप्त हुई।

शोभायात्रा में मणिधारी मित्र मडंल से जुडे लोग भजन गाते चल रहे थे। छोटे-छोटे बच्चे धर्म ज्ञान का प्रचार करते हुए अपने हाथों में तख्ती लेकर चल रहे थे। जैन जागृति महिला मंडल द्वारा जिनालय में पहुँचने पर स्वागत गीत गाया गया। तथा विमल पारख, पुष्पा गोलच्छा, राखी संकलेचा एवं महिला मण्डल टीम ने भी भजन प्रस्तुत किया।

जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी बैद ने कहा कि यह हमारा शौभाग्य है कि साध्वी वृन्दों के सान्निध्य में चातुर्मास होगा। चार महिने तक ज्ञान की गंगा बहेगी और इसमें हम सब डुबकी लगायेंगे।

साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाजी ने कहा कि चातुर्मास यानि परिवर्तन, जीवन में परिवर्तन आना ही चातुर्मास की सार्थकता है साध्वी डॉ. शासनप्रभाजी ने कहा कि अपने जीवन को कल्याण की और ले जाना ही प्रमुख उद्देश्य होना चाहिये। मानव जीवन हमे मिला है, तो उसे सत्कार्यो में लगाये। चातुर्मास एक ऐसा अवसर है जब हम धर्म-ज्ञान साधना में जुडकर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

बैंगलोर चातुर्मास प्रवेश

दिनाकं 25.72015 शनिवार को श्री विमलनाथ जैन श्वे. मंदिर एवं श्री जिन कुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के प्रांगण में एवं श्री जिन कुशल सूरि जैन आराधना भवन, बसवनगुडी बैंगलोर में प.पू. प्रवर्तिनी आगम ज्योति सज्जन श्री जी म.सा. की शिष्या संघ रत्ना प.पू. शशि प्रभा श्री जी म.सा. की विदुषी साध्वी वर्या श्री सम्यकदर्शना श्री जी म.सा. आदि ठाणा का भव्यातिभव्य चातुर्मासिक आराधनार्ध मंगल प्रवेश हुआ। श्री संभवनाथ जिनालय वी.वी. प्ररम से शोभा यात्रा प्रारंभ हुई जिसमें बैंगलोर के 25 मंडलो के अतिरिक बैंगलोर के सरगम युवक मंडल एवं बालिका बैण्ड मंडल अपने सुरीली स्वरों से सभी भक्तों के मन को मोह लिया। मंडल एवं गुरूभक्त उत्माह एवं आनंद से जगह-जगह नृत्य करते हुए जय जय कार के नारे राज मार्गो पर मंत्रा रहे थे। पू. गुरूवर्या श्री सम्यक्प्रभा श्री जी म.सा. के मधुर एवं सुरीले कंठ से निकली स्वर लहरियों ने वातावरण को भक्ति मय बना दिया। अंत में प.पू. गुरूवर्या श्री सम्यकदर्शना श्री जी म.सा. ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि चार्तुमास आत्मा का चहुंमुखी विकास एवं चार गतियों का नाश करने का काल है। कार्यक्रम का सफल संचालन अरविंद कोठारी द्वारा किया गया।

श्री व्यापारीलालजी

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

निमंत्रक

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

अहमदाबाद में चातुर्मास प्रवेश

अहमदाबाद खरतरगच्छ दादा सा का पगला नवरंगपुरा में दिनांक 22 जुलाई को पावन वेला में पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका प.पू. सुलोचना श्रीजी म.सा. की विदूषी शिष्यरत्ना प.पू. प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. प.पू. प्रियादिव्यांजनाश्रीजी म.सा. एवं प्रियशुभांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास प्रवेश हुआ। प्रवेश के पहले दिन से ही मेघराजा प्रसन्न हुए और अपनी रिमाझिम बूंदो से धरती व सभी के दिल में ठण्डक प्रदान कर दी। प्रातः काल 6 बजे एकदम मन को आनंदित करे वैसा वातावरण, मेघराजा भी एकदम शांत, चारों तरफ पक्षियों का कलंरव, मयूर अपने पंख खोलकर नृत्य कर रहे थे। अशोक जी भंसाली के निवास से तीनों साध्वी जी भगवंत श्रावको के साथ विहार करके कॉमर्स छः रास्ते पर पहुँचे। बादल भरे-भरे नजर आ रहे थे। तभी सभी बहिने धीरे-धीरे मण्डल की परिधानो में सजी अपने मस्तक पर कलश लेकर आ रही थी। कुछ ही क्षणों मे भाई-बहिनों का वहाँ आगमन हो गया। सामैया में सर्वप्रथम राज बेंड फिर श्रावकगण नृत्य गान आदि करते स्वागत की प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे, तत्पश्चात् साध्वीजी भगवंत, फिर मण्डल की बहिने कलश लेकर व अन्य बहिने थी इस प्रकार सामैया प्रारंभ हुआ। मार्ग में जयकारे श्रावक गण लगा रहे थे, बहिने मंगल गीत गा रही थी। बेंड वाले अपनी सुरीली आवाज में सभी को भाव विभोर कर रहे थे। बाहर पधारे हुए अतिथि भी जुलुस में समिलित होते जा रहे थे। ठीक समय पर जुलुस नवरंगपुरा दादासा का पगला पहुँचा। बहिनों ने गहुँलीया बनाकर अक्षत से बधाकर मंदिरजी में प्रवेश करवाया। चैत्यवंदन व दादागुरूदेव वंदन के पश्चात् कलश धारण की हुई बहनों ने तीनो साध्वीजी भगवंतो को तीन प्रदक्षिणा की रतनलालजी हाला वालो ने ट्रस्टी बहनों के कलश को पूरा। पुनः गँहुली, अक्षत, वंदन से बधाकर खरतरगच्छ भवन में प्रवेश करवाया। प्रवचन हॉल में पहुँचते ही संगीतकार मेहुल भाई ने भजनों की रमझट मचाई।

सादर श्रद्धांजली

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. की सांसारिक माताजी श्रीमती कमलाबाई का भुज में स्वर्गवास हो गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

मूल गढसिवाना वर्तमान में अहमदाबाद निवासी संघवी श्री चौथमलजी के सुपुत्र श्री सुरेशकुमारजी भंसाली के सुपुत्र श्री निखिल कुमार भंसाली का मात्र 30 वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है। परमात्मा व दादा गुरुदेव से प्रार्थना है कि पीडाभरी इन घडियों को परिवार को सहन करने की शक्ति दे।

बीकानेर निवासी परम गुरु भक्त श्री नेमचंदजी खजांची का जापान में स्वर्गवास हो गया। वे अत्यन्त उदार, शिक्षाप्रेमी और दादा गुरुदेव के परम भक्त सुश्रावक थे। पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से बीकानेर में उनकी ओर से ऐतिहासिक उपधान तप का आयोजन हुआ था। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी संपत्ति का भरपूर उपयोग किया। बीकानेर में कॉलेज का निर्माण करवाया।

उनके स्वर्गवास से गच्छ व शासन को बहुत बडी क्षति पहुँची है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

सादर श्रद्धांजली

जिनशासन के रत्न,
गच्छ के गौरव, जीवदया
प्रेमी, सरल स्वभावी

स्व. संघवी पुखराजजी
छाजेड़ (पादरु)

की प्रथम पुण्यतिथि
पर हार्दिक
श्रद्धांजली

स्व. संघवी पुखराजजी
छाजेड़ (पादरु)
(स्वर्गवास : दि. 12 जुलाई 2014)

श्रद्धावंत

RAJESH CHHAJER
CHHAJER CHEMICALS
502, Adamji Building
413, Narshi Natha Street,
Mumbai-400009
Mo. : 09322228400/09313350002
Tel. : 022 23428963, Res. : 23691234
chhajerchemicals@hotmail.com

SURESH CHHAJER
CHHAJER CHEMICALS
6-1, Shatrunjay Apt.
42/57, Vepery High Road,
Chennai-600007
Cell No. : 09841036585/09382837502
Tel. : 044 42147097, Res. : 25610604
sureshchhajer7@gmail.com

DINESH CHHAJER
NITYADARSAN ENTERPRISES
C-139, 2nd Floor, Mahendru Enclave,
G.T. Karnal Road, **New Delhi-110009.**
Cell No. : 09313784131, Tel. : 011 27412810
E-mail : dineshchhajer007@gmail.com

सिवाना में प्रवेश

गांधीधाम में प्रवेश

चैन्नई धोबीपेठ प्रवेश

चैन्नई लुम्बीनी में प्रवेश

मांडवी में प्रवेश

जयपुर में प्रवेश

Coming soon

ज्ञान प्रकाश- जीवन विकास

गणाधर गौतम स्वामी- जिनशासन के महान् ज्योतिर्धर परमात्मा महावीर के प्रथम शिष्य गणधर गौतम स्वामी का जीवन-दर्शन जन-जन का आदर्शमय पथ है।

परम विद्वान् पर परम विनीत, परम वैरागी पर परमात्मा में परम रागी, जिनशासन के अप्रतिम आस्था-केन्द्र गुरूवर गौतम के प्रेरणास्पद पावन चरित्र को औपन्यासिक पर सरल, दार्शनिक पर मधुर शैली में प्रस्तुत करने का भगीरथ पुरूषार्थ साधा है- मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने 1225 से अधिक पृष्ठों में उनके सरल, सहज, उदात्त और विनम्र जीवन वृत्त को विविध आगमिक घटनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। हर घर में सहेजने योग्य यह ग्रन्थ मात्र 50 रू. में उपलब्ध है।

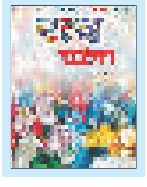

रत्न वाटिका- पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण में बाल-पीठी लक्ष्य से भटकती जा रही है। ऐसी विषम चिन्तनीय स्थिति में बालक को महात्मा व परमात्मा का पथ एवं जीवन-सदाचरण का बोध देने वाली 'रत्न वाटिका' एक तरह से संस्कार, विनय, विवेक, ज्ञान, दर्शन, चारित्र के रत्नों की वर्षा करने आयी है। पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की सिद्धहस्त लेखनी से सुवास वाटिका के द्वितीय खण्ड के रूप में आलेखित रंगीन, सचित्र, कलात्मक, सुन्दर और आकर्षक यह पुस्तक 112 पृष्ठों में है पर मूल्य मात्र 30 रू ही रखा है।

श्रमण चिन्तन- संयम जीवन की विशिष्टताओं एवं संसार के स्वार्थ-दु:ख-कर्मबंधनमय जीवन की संबोधि देने वाली इस प्रस्तक में संयम प्रेरक-विवेचक लेखों के साथ दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का संवदेनशील, हृदयस्पर्शी और मार्मिक विवेचन प्रस्तुत है। इस कार्य सहजताया साधा है - मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. ने।

जैन जीवन शैली (गुजराती) - जैन दर्शन एवं जीवन का मागदर्शन देने वाली 'जैन जीवन शैली' ग्रन्थ रत्न श्वेत-श्याम एवं रंगीन, दोनों विधाओं से प्रकाशित हुई। उनमें भाषा हिन्दी थी पर अब यही पुस्तक गुजराती भाषा में प्रस्तुत है। एक तरह से गुजराती भाषियों के लिये उपहार स्वरूप इस पुस्तक के मूल लेखक मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. स. एवं गुजराती भाषा अनुवादिका पारूल बी. गांधी (रजकोट) है। मूल्य मात्र 100 रू. है।

समस्या-समाधान और संतुष्टि- 17000 प्रश्नोत्तरो से सजी प्यासा कंठ मीठा पानी के द्वितीय खण्ड के रूप में प्रस्तुत है समस्या-समाधान और संतुष्टि जिसमें 20000 से अधिक प्रश्नोत्तर दिये गये हैं। त्रिषष्ठिशलाका पुरूष, खरतरगच्छ, ज्योतिष, कर्म, धर्म, भूगोल, व्यवहार, साधना, इतिहास आदि सैंकडों विषयों का स्पर्श करता यह ग्रन्थराज हर ग्रन्थालय की शोभा है। इसका विमोचन अभी अभी चेन्नई में हुआ है। 650 पृष्ठ वाला यह ग्रंथ मात्र 200रू. में उपलब्ध है।

इन सबका विक्रय मूल्य मुद्रण मूल्य से लगभग 50 प्रतिशत ही रखा गया है।

ये सारी पुस्तके जहाज मंदिर कार्यालय, जिनहरि विहार-पालीताणा एवं रायपुर चातुर्मास स्थल पर उपलब्ध है।

Jahajmandir - 09649640451, Palitana - 02848- 252653

तत्त्व परीक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 111

चतुर्विध संघ की साधना का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है- श्रावक जीवन की आराधना। श्रावक-श्राविका को जिन द्वादश व्रतों की साधना करनी होती हैं, उसी का एक अभिन्न अंग है-मार्गानुसारी जीवन के गुणों को धारण करना प्रस्तुत पहेली में मार्गानुसारी जीवन के पैंतीस गुणो में से 23 गुण दिये गये हैं, उनमें से 18 सही होने जरूरी है-

स	त्सं	ग	धु	अ	क	दा	ग्र	ही	न्य	प
क	ल	न	ह	उ	चि	त	व्य	य	वि	र
ज्ञ	अ	ध	वि	क्ष	भ	ध	त्र	द	ना	निं
त	जी	य	दा	वे	ख	र्म	उ	बा	सौ	दा
कृ	र्ण	न्या	क	व	की	क्ष	चि	म	म्य	त्या
ला	भो	य	र	नी	त	व	त	द	दी	गी
गु	ज	द	दा	भी	इ	ण	वे	ल	मृ	दु
णा	न	हं	या	अ	मा	दे	श	ज्ञ	ता	वा
नु	त्या	ल	ज्जा	लु	ता	र्शी	हा	री	जे	से
रा	गी	वा	ज्ञ	दी	द	स्वा	पा	का	वि	तृ
गी	स	य	गा	र्घ	न	ध्या	प	प	य	पि
बा	म	ल	दी	थ	फ	य	भी	रो	न्द्रि	तृ
स	ध	र्म	क्ष	व	ण	नि	रु	प	इ	मा

1. ..... 2. .....

3. ..... 4. .....

5. ..... 6. .....

7. ..... 8. .....

9. ..... 10. .....

11. ..... 12. .....

13. ..... 14. .....

15. ..... 16. .....

17. ..... 18. .....

19. ..... 20. .....

21. ..... 22. .....

23. .....

जहाज मन्दिर पहेली
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी
एम. जी. रोड़, पो. रायपुर - 492001 (छ. ग.),
फोन : 0771-2226085

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 25 सितम्बर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
श्री धनराजजी-सुनीतादेवी,
उज्ज्वल, गीतांजली,
प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली - 109 का सही उत्तर

1. आदिनाथ	2. महावीर स्वामी	3. मेतारज मुनि	4. बलभद्र मुनि
5. अभयदेव सूरि	6. जगच्चंद्रसूरि	7. छगनसागरजी	8. मुनि सनत्कुमार
9. अर्जुनमाली	10. गौतमस्वामी	11. वज्रस्वामी	12. बाहुबली
13. ढंढण मुनि	14. सुंदरी	15. धन्ना अणगार	

पुरस्कार विजेता

प्रथम बधाई पुरस्कार-शकुन्तला जैन- तिरूवन्नामलै

छह प्रेरणा पुरस्कार-प्रेमदेवी दुगड-जयपुर, सविता जैन-मुम्बई, आयुष जैन-मालपुरा, सुन्दरी बाई राखेचा-त्रिची, मंगला बाई चतुरमुथा- सारंगखेडा, नमिता जैन-उदयपुर

इनके उत्तर पत्र त्रुटिरहित थे- साध्वी श्री सुयशाश्रीजी-मालपुरा, साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी-जयपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, सुशीला डोसी-जोधपुर, इशिका सिंघी-मालपुरा, नरेश सिंघी-मालपुरा, मनीला पारख-जयपुर, कामिनी मेहता-जोधपुर, अमित जैन-जयपुर, कुशल ललवाणी-तिरूपात्तुर, चन्द्रा निमाणी- चैन्नई, निध्यान गुलेच्छा-जोधपुर, महावीर बोथरा-बल्लारी, गरिमा बेंगाणी-भाइंदर, डॉ. राजेन्द्र पामेचा-जोधपुर, अंजू वैद-जोधपुर, मधु जैन-ऊटी, टीना कोचर-अक्कलकुवा, सुशीला जैन-अक्कलकुवा, मेघा कोचर-अक्कलकुवा, अंजना सोलंकी-तिरूपुर, चाहत संकलेचा-मालपुरा, लवेश जैन- मालपुरा, मंजू संकलेचा-मालपुरा, विजय संकलेचा-मालपुरा, शोभा कोटडिया-त्रिची, किरण ललवाणी-बेंगलोर, सुरेश खवाड-जयपुर, आशीष खवाड-जयपुर, खुश्बू खवाड-जयपुर, मनीषा लूणावत-ऊटी, ज्योत्स्ना वैद-बेंगलोर, पिस्ता गोलेच्छा-जयपुर, मोहिनी पारख-धमतरी, शांतिबाई पारख-धमतरी, शांता वैद-जोधपुर, निर्मला बच्छावत-फलोदी, खुशी लोढ़ा-तलोदा, तारा रूनीवाल-जयपुर, कौशल छाजेड-उज्जैन, प्रीति बांठिया-हैदराबाद, राजेश कवाड-मदनगंज-किशनगढ, रेखा ओस्तवाल-सिंधनूर, दीशा जैन-जालोर, इन्द्रा संकलेचा-हैदराबाद, निर्मला सिसोदिया-जयपुर।

चातुर्मास परिवर्तन

पूजनीया पार्श्व मणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 3 का चातुर्मास तिरूपातूर में निश्चित किया गया था। पू. साध्वी श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म.सा. को विहार में एक वाहन की टक्कर से सिर में चोट लग जाने के कारण डॉक्टरों की सलाह अनुसार उनका चातुर्मास परिवर्तित किया गया है। उनका चातुर्मास बैंगलोर बन्नरगट्टा में होगा। ता. 27 जुलाई को उनका प्रवेश संपन्न हुआ।

पता-

पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी ठाणा-३

41 Phase 2, classic orchards, behind meenaxi temple
banargatta main road,
BANGALORE-560076 (KNTK)

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

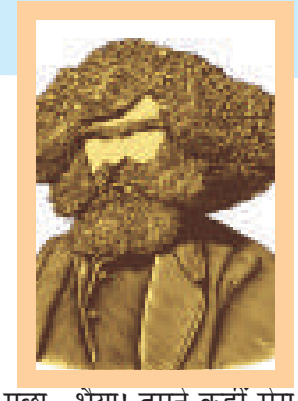

जटाशंकर का गधा खो गया था। वह पिछले चार घंटों से उसे लगातार खोज रहा था। जो भी व्यक्ति मिलता, उससे पूछता। गधे का रूप, रंग, आकार बताता। पर उसकी मेहनत सफल नहीं हुई।

उसने शहर के बहुत सारी गलियां, आम रास्ते सारे ढूंढ लिये। वह रूआंसा हो गया। उसे गधे की याद सताने लगी। गधे से वह बहुत काम लेता था। कल क्या होगा?यह चिंता उसे खाये जा रही थी।

वह लोगों से पूछताछ कर रहा था कि सामने मिस्टर घटाशंकर मिला। उससे पूछा- भैया! तुमने कहीं मेरा गधा देखा है।

घटाशंकर चार मिनट तक उसे घूर कर देखता रहा।

फिर पूछा- भैया! तुम जिसकी सवारी कर रहे हो, क्या यह तुम्हारा वही गधा नहीं है, जिसे तुम खोज रहे हो!

जटाशंकर ने अपनी नीचे नजर डाली! गधे को देखा और जोर से बोला- अरे! यही तो वह गधा है, जिसे मैं इतनी देर से खोज रहा हूँ।

मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि मैं गधे पर सवार हूँ या पैदल ही चल रहा हूँ।

गधा पास में है और दुनिया में दूर दूर खोज रहा है।

शांति हमारे भीतर है और हम पदार्थों, पुद्गलों और संबंधों में खोज रहे हैं। अपने भीतर नजर डालो, खजाना वहीं मिलेगा।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित
श्री जिनकुशल हेम विहारधाम
जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

रायपुर में चातुर्मास भव्य प्रवेश

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

गणाधीश का भाव्य स्वागत करते हुए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंहजी

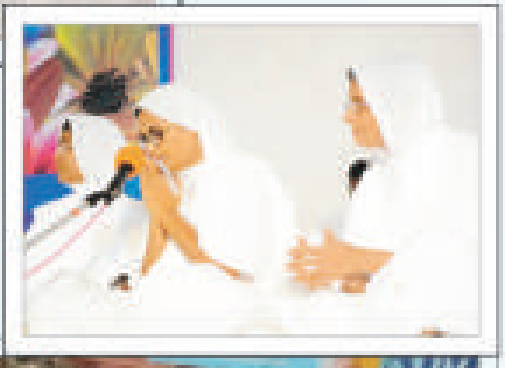

छत्तीसगढ़ प्रवेश राजनांदगांव में

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मंदिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649642451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

रूपांकन : ... जोधपुर - 98290 32489